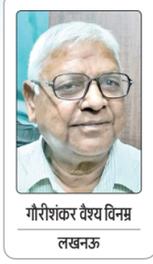


अंता

सृष्टि के आरंभ में ही भगवान विश्वकर्मा ने अड़सठ तीर्थों और उन्नीस पुण्य कूपों के सहित संभल तीर्थ का निर्माण किया था। सत्ययुग में इसका नाम 'सत्यव्रत', त्रेता में 'महागिरि', द्वापर में 'पिंगल' और अब कलियुग में 'शंभल' है। शंभल आजकल 'संभल' नाम से प्रसिद्ध है। संभल माहात्म्य और अन्य पुराणों में भी तालव्य शकार से 'शंभल' नाम का उल्लेख है, किंतु आजकल 'संभल' नाम ही प्रचलित है। यह इसलिए है, क्योंकि कुछ लोग तालव्य 'शकार का उच्चारण नहीं कर पाते। ऐसा माना जाता है कि 'शंभल' और 'संभल' दोनों 'शम्भालय' शब्द के अपभ्रंश हैं। 'शम्भालय' शब्द से 'शंभु का आलय' अर्थ स्पष्ट ध्वनित होता है। इसे गुप्त रखने के लिए ही इस स्थान को 'शंभल' कहा जाता है।



गौरीशंकर वैश्य विनय
लखनऊ



प्राचीन तीर्थों में प्रमुख संभल

पृथ्वीराज चौहान की राजधानी

संभल अति प्राचीनकाल से पावन भगवद्दाम के रूप में प्रसिद्ध रहा है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने भी इस पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छठी शताब्दी में हर्ष के शासनकाल में संभल में ब्राह्मणों की प्रधानता थी और उनके माध्यम से ज्ञान का सूर्य संभल में उदयाचल के शिखर पर चमक रहा था। डॉ. ब्रजेन्द्रमोहन शांभुधर के अनुसार ईसा की बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पृथ्वीराज चौहान का संभल में आधिपत्य था तथा उनकी पुत्री बेला वहां सती हुई थी। उन्होंने शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए और उनके आक्रमणों से बचने के लिए संभल को अपनी राजधानी भी बनाया था। यहां सुरंगों के माध्यम से अपनी रक्षा का प्रबंध किया गया था। यहां दिल्ली, अजमेर और कन्नौज को जाने वाली सुरंगें थीं। खुदाई होने पर अब कहीं-कहीं उनके चिह्न मिलते हैं।



तीनों कोनों पर स्थापित शिवलिंग

संभल माहात्म्य के पढ़ने से ज्ञात होता है कि पूरा संभल हरि-मंदिर ही है। इसके तीनों कोनों पर तीन शिवलिंग स्थापित हैं। दक्षिण में संभलेश्वर, पूर्व में चंद्रेश्वर और उत्तर में भुवनेश्वर। इन तीन कोनों वाले संभल की बाहरी परिक्रमा चौबीस कोस की है। प्रत्येक कार्तिक शुक्लपक्ष की चतुर्थी-पंचमी को इस परिक्रमा में हजारों नर-नारी सम्मिलित होते हैं। इसके बारह कोस के भीतरी क्षेत्र में अड़सठ तीर्थ और उन्नीस कूप हैं। इसके इतने बड़े आकार में ब्रह्मा जी का निवास है। इसके ठीक मध्य में तलवार हाथ में लिए, घोड़े पर सवार श्रीकल्कि भगवान की दिव्यमूर्ति से सुशोभित 'हरिमंदिर' था, जिसे मध्यकाल में विधर्मी आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। बाद में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस स्थान के निकट एक वैष्णव मंदिर का निर्माण करवाया, जो अब श्रीविष्णु कल्कि मंदिर नाम से प्रसिद्ध है। कल्कि पुराण तृतीय अंश 18 अध्याय, श्लोक 4 में स्पष्ट उल्लेख है - यत्राष्टपष्टितीर्थानां सम्भवः शम्भलेभवत्। मृत्योमोक्षः क्षितौ कल्केरकलस्य पदाश्रयात्।। अर्थात् जहां अड़सठ तीर्थों का संभव हुआ है, वह तीर्थ शिरोमणि संभल भगवान, कल्कि के चरणों के प्रताप से मोक्ष का धाम है।

पुराणों में वर्णित संभल

कल्कि पुराण में कल्कि भगवान के संभल में अवतरण की विस्तृत कथा वर्णित है। श्लोक 1/1/15 कहता है - प्रलयकाल के अंत में जगत की सृष्टि करने वाले लोकपितामह ब्रह्मा अपनी पीठ से भयंकर मलिन पातक की सृष्टि की, वह अधर्म नाम से विख्यात हुआ। उस अधर्म का प्रचार आरंभ होते ही सब देवता दुखी होकर श्रीनारायण को भूमंडल की दुर्दशा सुनाते हैं। तब विष्णु भगवान संभल (उत्तर प्रदेश) में विष्णुयशा ब्राह्मण के यहां अपने अवतार का वचन देते हैं। लक्ष्मी जी सिंहलद्वीप में बृहद्रथ राजर्षि की धर्मपत्नी कौमुदी की कोख से जन्म लेती हैं। इनका नाम 'पद्मा' है। कल्कि भगवान का वैशाखमास के शुक्लपक्ष की द्वादशी के दिन कन्या लग्न में अवतार होता है। भगवान चतुर्भुजरूप से माता-पिता को दर्शन देकर ब्रह्मा जी की प्रार्थना से द्विभुज रूप धारण करते हैं। भगवान शिव के द्वारा भेजे गए वेदमय शुक के माध्यम से सिंघलद्वीप में पद्मावती के स्वयंवर का समाचार प्राप्त कर श्रीकल्कि भगवान उस स्वयंवर में पहुंचते हैं। वहां लक्ष्मी रूपिणी के साथ श्रीकल्कि भगवान का विवाह संस्कार संपन्न हुआ। पद्मावती को साथ लेकर भगवान कल्कि ने विश्वकर्मा द्वारा सुसज्जित संभल नगर में प्रवेश किया। श्रीहरि की यह अवतारकथा परममंगलकारिणी है, जैसा कि कल्कि पुराण में कहा गया है - कल्कि महाविष्णु के परम अद्भुत अवतार की यह कथा भक्तिपूर्वक पढ़ने और सुनने वालों के सभी अमंगलों का नाश करने वाली है।

30 साल बाद बना शुक्र और शनि का दुर्लभ संयोग

शनि-शुक्र का 30 साल बाद दुर्लभ संयोग मीन राशि में बना है, जिसने ज्योतिष जगत में मालव्य राजयोग का प्रारंभिक स्वरूप रचा है। यह योग स्थिरता के कारक शनि और सुख-वैभव के दाता शुक्र का अनुपम मेल है, जब शुक्र उदय अवस्था में अपनी उच्च राशि मीन की ओर अग्रसर होकर शनि से युति करेंगे। 28 जनवरी का अर्धकेंद्र योग (शनि मीन में, शुक्र मकर में) प्रारंभिक ऊर्जा का संकेत है, जो पूर्ण युति तक (मार्च तक) कार्य करता रहता है। शनि मीन में 29 मार्च 2025 से 3 जून 2027 तक रहेंगे, लेकिन शुक्र के साथ निकट युति केवल 2 मार्च से 26 मार्च तक चरम पर होगी। यह 30 वर्ष बाद का संयोग धन-प्रगति का लंबा प्रभाव छोड़ेगा।



आचार्य महेंद्र पांडेय
ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ



योग का ज्योतिषीय महत्व

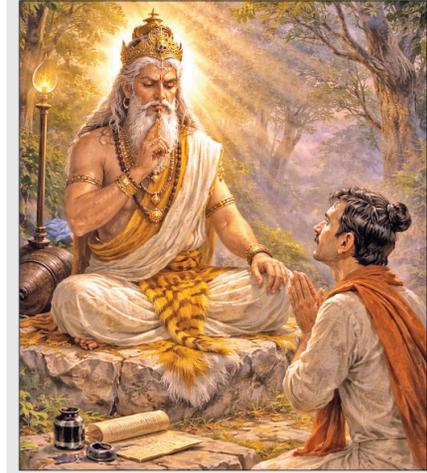
शनि-शुक्र युति मीन में कर्म और भाग का दुर्लभ संतुलन स्थापित करती है। शनि पहले से मीन में स्थित है, जबकि शुक्र 1 फरवरी के उदय से ठीक पहले 28 जनवरी को इस योग को सक्रिय किया। 28 जनवरी 2026 से बना शनि-शुक्र का दुर्लभ अर्धकेंद्र योग (45 डिग्री दूरी) मुख्य रूप से एक दिवसीय या अल्पकालिक प्रभाव वाला है, लेकिन इसका व्यापक फल मीन युति तक जारी रहेगा। वास्तविक शनि-शुक्र युति मीन राशि में 2 मार्च 2026 को सुबह लगभग 5 बजे बनेगी और लगभग 26 दिनों तक (26 मार्च 2026 तक) प्रभावी रहेगी। हिंदू पंचांग के अनुसार, शुक्र का मीन गोचर 2 मार्च से शुरू होकर 28 मार्च के आसपास समाप्त होगा, जब शुक्र अमली राशि में प्रवेश करेंगे मीन जल राशि गुरु के अधीन होने से यह युति आध्यात्मिक ऊंचाइयों को भी छूएगी। पिछले 30 वर्षों में ऐसी युति दुर्लभ रही, जो जीवन के कठिन दौर को वैभवपूर्ण मोड़ देती है। वर्तमान गोचर चक्र में यह शनि की साढ़ेसाती और शुक्र की दशा प्रभावित राशियों के लिए वरदान सिद्ध होगा। वास्तु शास्त्र में उत्तर-पूर्व कोण की शुद्धि (जल स्रोत स्थापना) और फेंग-शुई में दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में गुलाबी क्रिस्टल रखने से ग्रह ऊर्जा का अधिकतम लाभ मिलेगा।

सभी राशियों पर विस्तृत प्रभाव

- **मेष राशि:** 12 वें भाव में यह योग विदेश यात्रा, छिपे खचों पर नियंत्रण और आध्यात्मिक जागरण लाएगा। नौकरीपेशा लोगों को अत्याश्रित लाभ, लेकिन जल्दबाजी से बचे। प्रेम संबंध गहराएंगे।
- **वृषभ राशि:** 11 वें भाव से मित्र मंडली और सामाजिक नेटवर्क से धन लाभ। विवाह योग प्रबल, व्यापारिक साझेदारी मजबूत होगी। सौख्य और विलासिता पर निवेश फलदायी।
- **मिथुन राशि:** 10 वें भाव में करियर का स्वर्णिम काल, प्रमोशन, नई जिम्मेदारियां। रचनात्मक क्षेत्रों में मान-सम्मान, प्रेमी से स्थायी बंधन की संभावना।
- **कर्क राशि:** भाग्य स्थान (9 वें भाव) सक्रिय, उच्च शिक्षा, धार्मिक यात्रा या पिता से सहयोग। कानूनी मामलों में विजय, धन संवय में वृद्धि।
- **सिंह राशि:** 8 वें भाव से विरासत, बीमा या रहस्यमय लाभ। वैवाहिक जीवन में मधुरता, स्वास्थ्य में सुधार, लेकिन नियमित जांच जरूरी। आध्यात्मिक साधना फलेगी।
- **कन्या राशि:** 7 वें भाव में साझेदारी मजबूत, व्यापार वृद्धि। नीच प्रभाव कम होकर वैवाहिक सुख बढ़ेगा, लेकिन निर्णय सावधानी से ले।
- **तुला राशि:** 6 वें भाव से शत्रु पर विजय, स्वास्थ्य उन्नति और नौकरी में स्थिरता। विवाद सुलझेगे, ऋण मुक्ति के योग।
- **वृश्चिक राशि:** 5 वें भाव में संतान सुख, रोमांस चरम पर। रचनात्मकता, शिक्षा और निवेश में सफलता, कलात्मक क्षेत्र चमकेंगे।
- **धनु राशि:** 4 वें भाव से घर-सुख, वाहन खरीद और माता से लाभ। संपत्ति सौदे आदर्श, पारिवारिक शांति स्थापित होगी।
- **मकर राशि:** 3 वें भाव में साहस वृद्धि, भाई-बहन सहयोग। संवार, लेखन या मीडिया क्षेत्र में प्रगति, छोटी यात्राएं सुखद।
- **कुंभ राशि:** 2 वें भाव से धन वर्षा, वाणी शक्ति प्रभावी। पारिवारिक सुख, बचत में इजाजा और स्वादिष्ट भोजन का आनंद।
- **मीन राशि:** लग्न में योग्य व्यक्ति को चुंबकीय बनाएगा। विवाह, करियर और स्वास्थ्य में चरम सफलता यह आपका स्वर्णिम समय है।

पौराणिक कथा

मौन का वरदान



प्राचीन काल में सरस्वती नदी के तट पर एक समृद्ध राज्य था। उस राज्य में देवदत्त नाम का एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। शास्त्रों का उसे गहरा ज्ञान था, वाणी में अद्भुत प्रभाव था, किंतु उसका स्वभाव अत्यधिक वाचाल था। वह हर सभा में बोलता, हर विषय पर अपनी राय देता और प्रायः बिना सोचे-समझे कठोर वचन कह बैठता। उसकी विद्या के कारण लोग उसका सम्मान करते थे, पर उसके वचनों से कई मन आहत भी होते थे। एक दिन देवदत्त ज्ञान-यज्ञ के लिए वन की ओर गया। वहां उसे एक तपस्वी मिले, जो वर्षों से मौन व्रत धारण किए हुए थे। देवदत्त ने उन्हें बार-बार प्रश्न किए, पर वे शांत रहे। उनकी निःशब्द उपस्थिति ने देवदत्त को विचलित कर दिया। अंततः उसने उपहास करते हुए कहा, "हे मुनिवर, यदि आप बोल नहीं सकते तो तपस्या का क्या लाभ?" तभी उस तपस्वी का तेजस्वी रूप प्रकट हुआ। वे स्वयं बृहस्पति थे, देवताओं के गुरु। उन्होंने मधुर स्वर में कहा, "वत्स, वाणी ईश्वर का वरदान है, किंतु उसका संयम उससे भी बड़ा तप है।"

यह कहकर बृहस्पति ने देवदत्त को वरदान दिया- "एक दिन के लिए तुम्हारे मुख से केवल वही वचन निकलेंगे, जो सत्य और कल्याणकारी होंगे।" देवदत्त हंस पड़ा। उसे लगा यह तो साधारण-सा वरदान है। पर जैसे ही वह नगर लौटा, उसे अनुभव हुआ कि वह बिना सोचे कुछ भी नहीं बोल पा रहा है। जहां पहले वह तुरंत प्रतिक्रिया देता था, वहां अब उसे मौन रहना पड़ रहा था। कई बार लोग उससे प्रश्न करते, पर वह उत्तर देने से पहले भीतर झांकता कि क्या उसका वचन किसी को चोट तो नहीं पहुंचाएगा। दिन ढलते-ढलते देवदत्त को अनुभूति हुई कि मौन में एक अद्भुत शांति है। उसके शब्द अब कम थे, पर प्रभावशाली थे। जिन स्थानों पर वह पहले विवाद उत्पन्न करता था, वहां अब सौहार्द बन रहा था। संध्या समय बृहस्पति पुनः प्रकट हुए। देवदत्त ने विनम्र होकर कहा, "गुरुदेव, आज मैंने ज्ञान की अनिर्घटित वाणी अज्ञान है और संयमित मौन ही सच्चा ज्ञान।" बृहस्पति मुस्कराए और अंतर्धान हो गए। उस दिन से देवदत्त ने व्रत लिया कि वह बोलेंगा तो सोचकर और मौन रखेगा तो समझकर।

बोधकथा

एक साधारण-सा व्यक्ति अपनी रोजमर्रा की राह पर चला जा रहा था। दिन ढलने को था, धूप मद्धिम पड़ चुकी थी। तभी रास्ते में उसे एक गंभीर, तेजस्वी व्यक्तिव वाला पुरुष दिखाई दिया। उसके चेहरे पर अद्भुत शांति और आंखों में गहराई थी। उस अजनबी ने थके स्वर में पानी मांगा। व्यक्ति ने बिना कोई प्रश्न किए, बिना यह सोचे कि सामने कौन है, अपना लोटा आगे बढ़ा दिया और उसकी प्यास बुझाई। पानी पीते ही उस पुरुष का स्वर बदल गया। उसने कहा, "वत्स, तुम मुझे पहचान नहीं सके, पर मैं यमराज हूँ। आज मैं तुम्हारे प्राण लेने आया था। किंतु तुम्हारे इस निःस्वार्थ कर्म ने मुझे तुम्हें एक अवसर देने के लिए बाध्य कर दिया है।"

यह कहकर यमराज ने उसे एक डायरी थमाई और बोले, "इसमें जो कुछ भी तुम लिखोगे, वही सत्य हो जाएगा, किंतु ध्यान रहे, तुम्हारे पास केवल पांच मिनट हैं।" व्यक्ति का मन उत्सुकता और लोभ से भर उठा। उसने जल्दी-जल्दी डायरी के पन्ने पलटने शुरू किए। पहले पृष्ठ पर लिखा था कि उसका पड़ोसी लॉटरी जीतकर करोड़पति बनने वाला है। यह पढ़ते ही उसके मन में ईर्ष्या जाग उठी। उसने तुरंत लिख दिया कि पड़ोसी की लॉटरी न निकले। अगले पन्ने पर लिखा था कि उसका मित्र चुनाव जीतकर मंत्री बनने वाला है। उसे यह भी सहन

नहीं हुआ। उसने लिख दिया कि वह चुनाव हार जाए। इसी तरह वह एक के बाद एक पन्ने पलटता गया और हर जगह दूसरों के उज्ज्वल भविष्य को अंधकार में बदलता चला गया। समय का ध्यान ही नहीं रहा। अंततः जब उसने अंतिम पन्ना पलटा, तो वहां उसका स्वयं का नाम लिखा था। उसका हृदय धड़क उठा। जैसे ही उसने अपनी किस्मत लिखने के लिए कलम उठाई, यमराज ने डायरी उसके हाथ से ले ली। यमराज गंभीर स्वर में बोले, "वत्स, तुम्हारा समय समाप्त हो चुका है। तुम्हें जो शक्ति अपने जीवन को संवारने के लिए दी गई थी, उसे तुमने दूसरों का अहित करने में व्यर्थ कर दिया। जिसने अपने अवसर का दुरुपयोग किया, वह स्वयं अपने विनाश का कारण बनता है। अब तुम्हारा अंत निश्चित है।" यह सुनते ही व्यक्ति का सिर लज्जा और पश्चाताप से झुक गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे, किंतु अब समय लौटकर नहीं आ सकता था।

यह कथा हमें सिखाती है कि ईश्वर द्वारा दिया गया समय, शक्ति और अवसर अत्यंत मूल्यवान होते हैं, जो व्यक्ति दूसरों के कल्याण में उन्हे लगाता है, वही सच्चे अर्थों में सुखी और धन्य होता है। दूसरों का बुरा सोचने वाला अंततः स्वयं ही अपना भविष्य बिगाड़ लेता है।

अवसर और विवेक

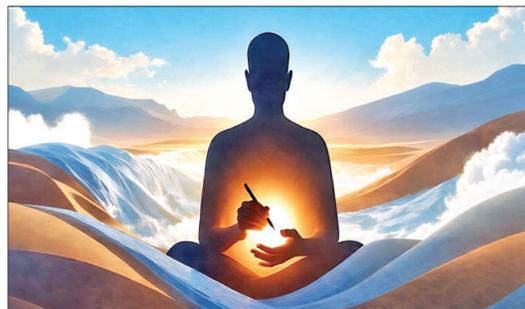
जीवन को संवारने वाला सर्वोत्तम गुण है संयम

मनुष्य जीवन को सुचारु, सार्थक और सुखद बनाने में कई गुणों की आवश्यकता होती है, जैसे सत्यनिष्ठा (ईमानदारी), करुणा और संवेदनशीलता, आत्मनियंत्रण (क्रोध, लालच, ईर्ष्या जैसी भावनाओं पर नियंत्रण), धैर्य, परिश्रम, अनुशासन, कृतज्ञता (जो मिला है उसकी सराहना करना और अहंकार से दूर रहना), सहयोग भावना, आदर और विनम्रता तथा सकारात्मक सोच आदि, लेकिन संयम उनमें सबसे उत्तम और प्रभावशाली गुण माना गया है। संस्कृत में बड़े ही खूबसूरत शब्दों में संयम के बारे में यह कहा गया है कि - संयमः सर्वसाधूनां भूषणं परमं स्मृतम्। संयमैवैव जीवन्ति विद्वान्सोऽखिलकारिणः॥ तात्पर्य यह है कि संयम सभी सज्जनों का परम आभूषण है। विद्वान लोग अपने सभी कार्यों में संयम के बल पर ही सफल होते हैं। वास्तव में यहां यह जानने और समझने की जरूरत है कि संयम का मतलब क्या है। दरअसल, संयम का अर्थ है - अपने विचारों, इच्छाओं, भावनाओं और व्यवहार को नियंत्रित रखते हुए संतुलित ढंग से जीवन जीना। सरल शब्दों में कहें, तो वास्तव में यह वह क्षमता है, जिसमें व्यक्ति कठिन परिस्थितियों, क्रोध, लालच, वासना या किसी भी आवेग के समय भी शांति, विवेक और मर्यादा बनाए रखता है।



सुनील कुमार महला
लेखक

संयम जीवन में आत्मनियंत्रण, संतुलन और विवेकपूर्ण आचरण का नाम है। संयम का अर्थ केवल इच्छाओं को दबाना नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार अपने मन, वचन और कर्म को नियंत्रित रखना है, जो व्यक्ति अपनी भावनाओं, क्रोध, लालच, बोलचाल और व्यवहार पर रोक लगा सकता है, वही वास्तव में परिपक्वता की राह पर चलता है। संयमी व्यक्ति जीवन में हर स्थिति में धैर्य बनाए रखता है। कठिन समय में वह घबराता नहीं, बल्कि विवेक से निर्णय लेता है। यही कारण है कि ऐसे लोग जीवन में अधिक सफल होते हैं, क्योंकि जल्दबाजी और आवेश में लिए निर्णय अक्सर नुकसान पहुंचाते हैं। संयमित मन सोचने, समझने और सही दिशा चुनने में सक्षम होता है। सफलता उन्हीं के कदम चूमती है, जिनके विचार नियंत्रित होते हैं और जिनका ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित रहता है, जो व्यक्ति सदैव संयम में स्थित रहता है, उसकी सिद्धि और सफलता निश्चित है। संस्कृत में एक श्लोक के माध्यम से यह उल्लेख किया गया है कि यः संयमं न जहाति दुःखसमयेऽपि दूरतः। तं नित्यमभिजानन्ति देवाः साधुवरं नरम्॥



यानी कि जो व्यक्ति दुःख या संकट में भी संयम नहीं छोड़ता, देवता भी उसे श्रेष्ठ मनुष्य मानते हैं। वास्तव में, संयम मनुष्य को भीतर से मजबूती देता है। यह ऐसा गुण है, जो हर परिस्थिति में व्यक्ति को सही दिशा देता है और उसे सम्मान व सफलता दिलाता है। यह संयम ही होता है, जो सही निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाता है, मानसिक शांति और स्थिरता लाता है।

यहां रखिए कि जिस व्यक्ति में संयम होता है, वह छोटी-छोटी बातों पर विचलित नहीं होता। मन स्थिर रहता है, तनाव कम होता है। संयम हमारे

संवाद को संतुलित रखता है और संबंध मजबूत बनाता है। मतलब यह है कि यह हमारे रिश्तों में मधुरता लाता है। जीवन में बड़ी उपलब्धियां पाने के लिए धैर्य और निरंतरता चाहिए। संयम व्यक्ति को विचलित होने से बचाता है और लक्ष्य की ओर बनाए रखता है। संयम खाना-पीना, खर्च करना, बोलना, भावनाओं को व्यक्त करना आदि सब पर स्व-नियंत्रण देता है, जिससे जीवन अनुशासित बनता है। सच तो यह है कि संयमी व्यक्ति परिपक्व, विश्वसनीय और संतुलित माना जाता है। यह व्यक्तिव का श्रेष्ठ गुण है। संयम से व्यक्ति के भीतर एक

आत्मिक शांति पैदा होती है। वह दूसरों की बातों पर अनावश्यक प्रतिक्रिया नहीं देता, छोटी बातों पर परेशान नहीं होता। इसलिए वह कभी ज्यादा दुखी नहीं होता, क्योंकि दुःख का बड़ा कारण हमारी अनियंत्रित प्रतिक्रियाएं ही होती हैं। संयम हमें सिखाता है कि हर बात पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं, कभी-कभी मौन और धैर्य ही बुद्धिमानी होती है। संयमित जीवन जीने वाला व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को समझता है, सम्मान देता है और विवादों से दूर रहता है। उसके व्यवहार में मर्यादा और नम्रता होती है, जिससे समाज में उसका सम्मान बढ़ता है।

आज के तेज रफ्तार जीवन में जहां तनाव, प्रतिस्पर्धा और अनिश्चितता हर कदम पर साथ चलती है, वहां संयम का महत्व और भी बढ़ जाता है। संयम हमें संतुलन, स्थिरता और सकारात्मकता सिखाता है। अतः जो व्यक्ति संयम रखना जानता है, वह न केवल सफल होता है, बल्कि मानसिक रूप से भी सुखी रहता है। संयम ही जीवन का वास्तविक आभूषण है, जो हमें सही दिशा और समृद्ध जीवन की ओर ले जाता है।